HANS SHODH SUDHA, Vol. 1, Issue 4, (2021), pp. 46-49

# विश्व सभ्यताओं में भारत की भूमिका और मौलाना आज़ाद की दृष्टि

**डॉ पूजा गुप्ता**
*सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग,*
*रामजस कॉलेज,दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७, भारत*
Email: poojagupta@ramjas.du.ac.in

जीवन-यापन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की सामूहिक अवधारणा और पालन संस्कृति है। सभ्यता संस्कृति का प्रमुख अंग है। संस्कृति व सभ्यता समाज की परिष्कृत दशा दर्शाते हैं। अतः इनका सीधा संबंध मानवता से है। स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, 'संस्कृति का अर्थ मनुष्य का भीतरी विकास है, उसकी नैतिक उन्नति है, एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार है और दूसरों को समझने की शक्ति है।' यह शक्ति मनुष्य को हजारों-लाखों वर्षों के प्रयत्न से ही मिलती है, इसी कारण काका कालेलकर ने कहा है कि - 'हजारों-लाखों वर्षों के पुरुषार्थ से मनुष्य जाती ने जो कुछ पाया है, वही उसकी संस्कृति और सभ्यता है।' इस प्रकार धर्म, राजनीति, भौतिक-अभौतिक, जगत में जो कुछ भी मानव के लिए है, वह सब उसकी संस्कृति ऐवम सभ्यता का ही अंग है।

इसी कारण समाज और संस्कृति का अटूट संबंध है। मेरे विचार में समाज के अभाव में किसी भी सभ्यता अथवा संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तात्पर्य यह है कि व्यक्तियों के आपसी सहयोग से समाज बनता है और उसकी सभ्यता विकसित होती है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति सामूहिक हितार्थ जो कुछ भी करता है, उसका परिष्कृत स्वरूप ही 'संस्कृति' कहलाता है। चूंकि सभ्यता उसका अभिन्न अंग है इसलिए मानव-समाज की वह एक ऐसी विशेषता है, जो उसे अन्य प्राणियों से अलग कर एक उच्च धरातल पर खड़ा कर देती है। मानव को सृष्टि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सृजन बना देती है।

किसी भी देश की संस्कृति के दर्शन वहाँ रहने वाले जन-समुदाय के आचरण और व्यवहार में हुआ करते है। कहा भी गया है कि किसी समाज और उससे जुड़े व्यक्तियों की बौद्धिक गतिविधियाँ ही उस समाज की सभ्यता ऐवम संस्कृति का परिचय दे पाती हैं। समाज के आचार-विचार, रीति-रिवाज, उन्नति-अवनति, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अवस्थाओं का मानव सभ्यता की झलक देते हैं। मुझे लगता है कि व्यवहारिक स्तर पर मानव-समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, भौतिक ऐवम आध्यात्मिक दोनों ही, मानव सभ्यता का स्वरूप हैं।

इस दृष्टि से मूलतः मानव सभ्यता एक ही तत्व से संभूत है। भारतीय सभ्यता उसी एक विशद मानव-सभ्यता का प्रमुख अंग है। देश-काल की सीमाओं में जो अन्य सभ्यताएं विद्यमान हैं या रही हैं, उनमें से भारतीय सभ्यता की अपनी एक अलग पहचान व भूमिका है। हम सबने पढ़ा भी है कि भारत, रोम, मिस्र और यूनान की संस्कृतियाँ ऐतिहासिक कालक्रम की दृष्टि से संसार में प्राचीनतम स्वीकारी जाती हैं, परंतु अत्यधिक समृद्ध ऐवम विशाल भारतीय संस्कृति ही है।

यूनान, मिस्र, रोमां - सब मिट गए जहां से,
बाकी मगर है अब भी नामोनिशान हमारा।

विविध भाषाओं के साहित्य में उल्लेख है कि अपने अलग ऐवम समग्र व्यक्तित्व के रूप में भारतीय सांस्कृतिक व सभ्य चेतनाओं ने विश्व को चरम सीमा तक प्रभावित किया है। विश्व की मानवता के हित-संपदानार्थ बहुत कुछ दिया है। साथ ही, संस्कृति व सभ्यताओं की अन्य धाराओं से बहुत कुछ ग्रहण भी किया है। सभ्यता का एक ही चरम लक्ष्य है - उदात मानवता का निर्माण और विकास।

डॉ वसुदेवशरण अग्रवाल ने संस्कृति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि किसी भी देश की संस्कृति का संबंध वहाँ की प्राकृतिक और भौगोलिक सीमाओं, परिस्थितियों और आवश्यकतायों के साथ सीधा जुड़ा रहता है और इनसे पहचाना भी जाता है। किसी देश या राष्ट्र में लोग इन सबके साथ जितनी गहराई से जुड़े रहते हैं, उनके स्वरूप को जितनी गहराई से पहचानते हैं, उतने ही अधिक वे सुसंस्कृत कहे जाते हैं। सुसंस्कृति से सुसभ्यता का सीधा संपर्क है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत देश अनेक प्रकार के प्राकृतिक वैविधियों, माटी की गंधों, वनस्पतियों, खनिजों ऐवम अनन्य विविधताओं का देश है। इन्हीं के कारण ही यहाँ के लोगों के जीवन के विविध रूपों-भाषा, आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन, उत्सवों-त्योहारों, मान्यताओं आदि में भी विविधता है।

सर्वत्र परिव्याप्त विविधता और विभिन्नता होने पर भी सारा भारत देश अनादिकाल से एक अलक्षित रूप से परस्पर सुसंबंध रहा और आज भी है। यह एक

सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत तथ्य है। यहाँ के चारों कोनों में, दसों दिशाओं में विद्यमान पवित्र स्थल सभी के सांझे हैं। अनेकता में एकता, भेद में अभेद या समग्रतः समन्वयवादी दृष्टिकोण इसी कारण भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता मानी जाती है। बड़े गर्व और गौरव के साथ इसे हम भारतीय संस्कृति व सभ्यता की विश्व की समग्र-संस्कृति को एक अत्यधिक महत्वपूर्ण और मौलिक देन भी कह सकते हैं।

दार्शनिक दृष्टि से भी भारत में वैविध्य ऐवम अनेकता स्पष्ट है। यह प्रमाणित है कि अनेक प्रकार के दर्शन और जीवन-दर्शन यहाँ विकसित हुए हैं। यही अनेकता में एकता और भेद में अभेद दर्शन है। प्रत्येक दर्शन एक व्यक्ति विशेष की नहीं, अपितु समष्टि की उन्नति व समृद्धि की कामना से युक्त है। यही कारण है कि भारतीय सभ्यता में साहित्य-संगीत आदि विभिन्न कलाओं का चारमोदेश्य भी आनंद की प्राप्ति ही है। दर्शन, जीवन-दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान, ज्ञान, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, आख्यान-साहित्य सभी विषय यहाँ मानव-कल्याण और मानव-जीवन को आनन्दमय बनाने के चरम भाव को लेकर चले हैं। निराशा और संघर्षों के दुर्दान्त काल में भी यहाँ पर निराशावादी भावनाएँ कभी व्यवहार-जगत या साहित्य आदि में प्रश्रय नहीं पा सकीं। इस प्रकार चरम आनंद और आशावादी दृष्टिकोण की अपनी प्रमुख विशेषता से सभ्यता ने अपनी अलग पहचान बनाई और विश्व को एक अन्य महत्वपूर्ण पाठ भी पढ़ाया।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव हृदय की प्रबलता भारतीय सभ्यता की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता और देन है। हार्दिकता ही सहज मानवीय भावनाओं को समग्र स्थान दे सकती है। भारत के सत्य, अहिंसा, प्रेम, भाईचारा, सह-अस्तित्व और बौद्ध तथा आधुनिक काल के पंचशील आदि के सिद्धान्त इसी तथ्य की ओर इंगित करते हैं। भारतीय साधकों द्वारा प्राप्त सत्य अवम ज्ञान तत्व भारतीय सभ्यता की धरोहर हैं जिन्हें चिरन्तन काल से भारत विश्व मानवता के हित-साधन के लिए मुक्त भाव से बाँटता आ रहा है। इसी कारण व्यवहार और सामाजिक स्तरों पर अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ-विभेद रखते हुए भी भारत एक रहा और आज भी है। वह अपनी समग्र एकता-एकनिष्ठा को बनाए रखे हुए है। भारतीय सभ्यता एक सूक्ष्म आन्तरिक और भावनात्मक उपादान है जो नए युगीन तत्वों का समावेश कर लेती है परन्तु अपने शाश्वत मानवीय मूल्यों व तत्वों से कभी प्रवंचित नहीं होती। तभी तो विश्व की अन्य सभ्यताएँ व संस्कृतियाँ विघटित हो गई हैं या हो रही हैं और भारतीय सभ्यता सतत प्रवहनशील नदी की धारा के समान अपने गन्तव्य पथ पर गतिशील है और दूसरों के लिए भी प्रेरणा-स्त्रोत है।

मानव जन्म और स्वभाव से शान्त ऐवम अहिंसक है, न कि हिंसक। मनुष्य ईश्वर की अनुपम कृति है और दैवतुल्य गुणों से युक्त है। यही भारतीय सभ्यता की मूलभूत चेतना है। चूँकि विशेष परिस्थितियों के दबाव से ही मानव विद्रोही बनता है, इसलिए हमारा संघर्ष मानव या मानवता के विरुद्ध नहीं, अपितु उन परिस्थितियों के विरुद्ध है तो हीनताओं की सर्जक हैं। भारतीय सभ्यता समूचे विश्व को इन्हीं परिस्थितियों से निपटकर एक संयत ऐवम आदर्श मानव-समाज की संरचना का संदेश देती है। जीवन के प्रति, मानवता के साथ पूर्णयता विश्वस्त, आश्वस्त ऐवम निष्ठावान बने रहने की प्रेरणा भी भारतीय सभ्यता चिरन्तनकाल से देती आ रही है। वह आज भी उच्च मानवीय, सांस्कृतिक ऐवम नैतिक मूल्यों का ही प्रतिपादन कर रही है व अन्य सभ्यताओं को भी प्रेरित कर रही है।

भारतीय सभ्यता ने सदा सात्विक वृतियों ऐवम सत्य, अहिंसा, संयम, अनुशासन जैसे गुणों को अत्यधिक महत्व दिया है। मध्यकालीन भक्त व सन्त,स्वामी दयानन्द, गाँधी, विनोभा, विवेकानन्द आदि के द्वारा किए गए सामाजिक ऐवम राजनीतिक प्रयत्न इस बात का सजीव प्रमाण हैं। उपलब्ध साहिय के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भारतीय सभ्यता ने सदा सत्यानवेषण को ही अपना लक्ष्य बनाया व यही संदेश सम्पूर्ण विश्व को भी दिया।

'कर्म ही सबसे बड़ा धर्म है' - इसी को अपना भाव बना, भारतीय सभ्यता ने एक महत्म उपलब्धि प्राप्त की। कर्म को श्रेष्ठतम 'योग' मानकर जीवन में उसे महत्व दिया गया है। कर्म को भक्ति और ज्ञान के मध्य रखकर (भक्ति-कर्म-ज्ञान), भक्ति और ज्ञान को भी एक प्रकार का महत्म कर्म ही माना गया है। जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करके ही नित्य-शाश्वत तत्वों ऐवम सत्यों की उपलब्धि हो सकती है - मुख्यतः यही भारतीय सभ्यता का विश्व को चिरन्तन ऐवम शाश्वत संदेश है।

विश्व सभ्यताओं में भारत की भूमिका इस तथ्य से स्पष्ट हो सकती है कि भारत की सभ्यता का भौतिक उपलब्धियों अथवा कृत्रिमता से युक्त भावों की ओर न रहकर, आन्तरिक, आत्मिक ऐवम आध्यात्मिक उपलब्धियों की ओर अधिक रहा है जिससे कि मानवता का उद्धार हो सके। इसी विशेषता से भारतीय सभ्यता का सर्वाधिक वैशिष्टय है ऐवम वह अन्य विश्व सभ्यताओं से अधिक महत, सजीव, सार्वकालिक ऐवम मानव की उपकारक मानी जाती है।

भारतीय सभ्यता का ये प्रारूप दीर्घकालीन से, युगों-युगों से चले आ रहे घटनाक्रम में विकसित हुआ है। सभ्यता समाज का ही दर्पण है और मनुष्य समाज को बनाता है। भारतीय समाज के दार्शनिक, आध्यात्म-

तत्व चिन्तकों के कारण ही यहाँ की सभ्यता का हम सुसमृद्ध रूप देख रहे है। सत्य, अहिंसा, अनुशासन जैसे गुणों के अन्वेषी ही इस सभ्यता की गरिमा हैं। इन साधकों की साधना ऐवम तपस्या ने ही तो भारतीय सभ्यता को एक आबाध धारा बनाया है, जो अन्तः सलिला के रूप में अनादिकाल से प्रवाहित है और चिरन्तन काल तक, जब तक कि मानवता का अस्तित्व इस धारा पर रहेगा, प्रवाहित रहेगी।

ऐसे साधकों में *मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का नाम उल्लेखनीय है। भारतीय* सभ्यता ऐवम संस्कृति का मूलभाव - 'अनेकता में एकता' उन्हीं की देन है। धर्म उनके लिए सिर्फ एक विश्वास का स्त्रोत था, न कि लोगों को आपस में बाँटने का कारण। उन्होंने सत्य की एकता को पहचाना, जो कि भारतीय निरपेक्षता का सिद्धान्त भी है - 'सर्व पंथ संभवः', अर्थात् सभी विश्वासों को समान सम्मान। उनके इन्हीं गुणों और मानवता हितकारी विचारों ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभूतपूर्व नेता बना दिया।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में उन्होंने समस्त भारत को स्वाधीनता की एक आदर्श दृष्टि प्रदान की। अहिंसा को अपना उन्होंने स्वयं को एक अविच्छेदित ऐवम महान राष्ट्र के निर्माण प्रयत्न में समर्पित कर दिया। गाँधीजी ने कहा था कि *मौलाना आज़ाद का* राष्ट्रीयता में विश्वास उतना ही प्रबल है जितना कि उनका इस्लाम में विश्वास है। इसी विश्वास ने उन्हें 'कुरान' के अनुवाद के लिए प्रेरित किया। यह उनकी भारतीय सभ्यता को एक स्वर्णिम भेंट थी।

उनके लिए 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' स्वराज से अधिक महत्वपूर्ण थी क्योंकि वे जानते थे कि यदि स्वराज हमें नहीं मिला, तो यह केवल एक राष्ट्र की हानि होगी परन्तु यदि हिन्दू-मुस्लिम एकता टूट गई तो यह हानि सम्पूर्ण मानवता की होगी।[१] लेखक कौशल कुमार ने अपनी किताब 'मौलाना अबुल कलाम आज़ाद' में उनकी जीवनी प्रस्तुत करते हुए उल्लेख किया है कि वे एक अलग मुस्लिम राष्ट्र की स्थापना के विरुद्ध थे और उन्होंने अनेक प्रयत्नों से हिन्दू-मुस्लिम एकता सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[२]

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अपने खुले भावों, उन्मुक्त विचारों और आन्तरिक ऐवम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रेरणा दी। भारतीय नैशनल काँग्रेस के अध्यक्ष के तौर पर सन् १९२३ और सन् १९४० से १९४६ तक उन्होंने विषमता की स्तिथियों में भी स्वाधीनता संग्राम को नई चेतना दी। भारत की आज़ादी के बाद अपने अभूतपूर्व ज्ञान ऐवम क्षमता के कारण वे भारत के पहले शिक्षा मंत्री बने।[१] उन्होंने भारत के साक्षर, वैज्ञानिक ऐवम शैक्षिक मूलभूत का निर्माण किया। उनकी दृष्टि में शिक्षा कभी भी मानवता से भिन्न नहीं रही। उनका योगदान भारत की संस्कृति के पुनर्निर्माण से उल्लेखनीय है। उनके जीवन की उपलब्धियों से अवगत कराते हुए डॉ राम अयोध्या सिंह ने उन्हें अपनी रचना में आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में दर्शाया है।[३]

फारसी, अरबी, उर्दू और अंग्रेज़ी के महान साहित्य का विवेचन कर ऐवम 'कुरान' का गहन अध्ययन कर उन्होंने अपने स्वतन्त्र विचार बनाए जिसके फलस्वरूप वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति व अपने दृष्टिकोण का अनुसरण औरों की अपेक्षा अधिक स्वछंदता ऐवम आत्म-विश्वास से करते थे। इन्हीं कारणों से वे दूसरों के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत बन गए।

डॉ राधाकृष्णनन के अनुसार मौलाना आज़ाद ने हमेशा एक ऐसे समाज की कल्पना की जो अंधविश्वास, अनैतिकता, भाषा अथवा स्थान, धर्म अथवा जाति आदि के नाम पर भेदभाव से मुक्त हो। उन्होंने सदा एक निरपेक्ष राष्ट्र की आशा के व स्वछन्द विचारों का पक्ष लिया। उन्होंने राष्ट्रीय एकता के आदर्शों का प्रतिपादन कर प्रशासनिक ऐवम आर्थिक विकास के लिए संघर्ष किया। उन पर लिखे गए प्रत्येक लेख को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने सांप्रदायिकता को चुनौती देकर, जाति, धर्म, अथवा अन्य किसी भी मतभेद से ऊपर उठकर अपने भारत देश को अपार प्रेम दिया व उसके नागरिकों को ही सर्वोच प्राथमिकता दी।

संस्कृति ऐवम सभ्यता के अटूट सामंजस्य को दर्शाने वाले मौलाना आज़ाद प्राचीन व नये दोनों ही आचारों व विचारों के प्रचारक थे।[४] प्राचीन सभ्यता को वे अपनी धरोहर मानते थे और नई सभ्यता की ओर उन्होंने अपना रास्ता स्वयं ढूँढा ताकि नये रास्तों से वे उतने ही अवगत हो जाएं जितना कि वे पुरानी राहों से हैं। इस प्रकार वे भारतीय सभ्यता के मूलरूप की सुरक्षा के साथ नई धारणाओं को भी उसमें सम्मिलित कर, उसे और समृद्ध बनाते गए।[२]

एक दृढ़ राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ मौलाना आज़ाद एक अंतर्राष्ट्रीय ज्ञानी भी थे।[५] इनकी दृष्टि में सभ्यता एक ऐसी भूमि है जहाँ आपसी भाईचारे की फसल फलित हो सकती है। उन्हीं के शब्दों में, 'अगर हम मानवता ऐवम प्रेम के पुष्प हर जगह बिखेरें तो नफ़रत व शक के लिए कोई स्थान नहीं बचेगा और इस प्रकार हम आपसी समझ ऐवम परस्पर सौहाद्र को विकसित कर सकते हैं।'

इतिहास भी गवाह है कि राष्ट्रों को आपस में जोड़ने में सांस्कृतिक सम्बन्ध, राजनीतिक गठबंधनों से अधिक सफल रहे हैं। राजनीतिक गठबंधन आदान-प्रदान के समझौते पर टिके होते हैं जबकि सांस्कृतिक सम्पर्क आपसी विश्वास और समझ को और गहन बनाते हैं। उनके अनुसार शान्ति और विश्वव्यापी भाईचारा एक

समझौते के बल पर प्राप्त किए जा सकते हैं।[६] मैं समझती हूँ कि मौलाना आज़ाद का यह संदेश न केवल भारतीय सभ्यता अपितु अन्य विश्व सभ्यताओं के लिए भी एक प्रेरणा-स्त्रोत है और हमेशा रहेगा। आशा है कि उनके प्रेरणादायक जीवन से प्रेरित होकर हम सब भी अपना जीवन सार्थक बना पाएंगे।

**संदर्भ:**


१ *देश के पहले शिक्षा मंत्री, हिंदू-मुस्लिम एकता के हिमायती मौलाना अबुल कलाम आजाद"; Newsd* www.hindi.newsd.in

२ 'मौलाना अबुल कलाम आज़ाद', लेखक कौशल कुमार, प्रभात प्रकाशन, २०१८

३ 'आधुनिक भारत के निर्माता – मौलाना आज़ाद', लेखक डॉ राम अयोध्या सिंह, कलिबोर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीबुटर्स, २०२१

४ *https://www.itshindi.com/maulana-abul-kalam-azad.html*

५ *https://www.bbc.com/hindi/india-41952521*

६ *https://hi.wikipedia.org/wiki/अबुल_कलाम_आज़ाद*